आज का पुरुषार्थ, 5 June 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से ध्यान रखें .. साक्षात्कार मूर्त बनना है तो बाप समान बने .. हर एक विषय को साक्षी होकर देखें "*

भगवानुवाच .. " *एकदिन आयेगा तुम सभी को देखने वालों को तुम्हारा दिव्य स्वरुप ही दिखाई देगा, साधारण स्वरुप नहीं*"

तो आइये हम सभी अपने स्वरुप को **दिव्य** अर्थात **साक्षात्कार मूर्त** बनाये। ताकि हमें देखते ही वह अपने को देखने लगे। हमें देखते ही उन्हें अपने **सत्य स्वरुप की स्मृति आ जाये।** हमें देखते ही उन्हें भी प्रभु मिलन का भाव जग जाये।

जैसे ही हमें देखे उन्हें भी अपने **श्रेष्ठ भाग्य** बनाने की प्रेरणा प्राप्त हो जाये। यह बहुत बड़ी सेवा होगी। इसलिए बाबा कहते है .. " ***चेहरे और चलन से सेवा करो***"

अब भी यह सेवा होती है जिनकी **स्थिति** बहुत अच्छी है। जो बहुत अच्छे योगयुक्त रहते है। जो बहुत **पवित्र** है। जिन्होंने अपने जीवन को बहुत परिवर्तित कर दिया है।

अनेक लोग उनके पीछे-पीछे आकर ज्ञान मार्ग पर चलने लगता है। कितना बड़ा **पुण्य** होता है कि वह अनेकों को भगवान से मिलाने के आधार बन जाते है।

हमें अपने को दिव्य मूर्त बनाना है। **साक्षात्कार** मूर्त बनाना है। तो क्या याद रखेंगे .. ? जो साक्षीद्रष्टा होंगे वही साक्षात्कार मूर्त बनेंगे। जो साक्षात बाप समान होंगे वही साक्षात्कार मूर्त बनेंगे।

जो बाबा जैसा बन जायेंगे उनका ही संसार में दूसरों को साक्षात्कार होगा। और बाबा ने अपने दो बहुत अच्छी बातें कही है ..

यूँ तो बाबा में अनेक **गुण** और **शक्तियाँ** है। बाबा का कहना है ... " *यदि तुम मेरे जैसा बनना चाहते हो तो जैसे मैं इस संसार के खेल को साक्षी होकर देखता हूँ वैसे ही तुम भी देखो और सकाश दो*"

तो संसार की आत्माओं को **सकाश** देना और खेल को **साक्षी** होकर देखना। अपने पार्ट को भी साक्षी होके देखना और इस संसार के हर आत्मा के पार्ट को भी साक्षी होके निहारना। यह बहुत अच्छी स्थिति है अपने को दिव्य मूर्त बनाने के लिए।

जिसे भी हम देखे उसे आत्मिक भाव से देखे। उसे शुभ भावनाओं से देखें। कल्याण की भावनाओं से देखें। उसे इस **श्रेष्ठ दृष्टि से देखें** कि .. " *यह भी देवकुल की महान आत्मा है*"

इससे हमारी नयनों में बहुत अलौकिकता रहेगी। और जो भी हमें देखेगा उन्हें आभास होगा कि .. " **इनके देखना किसी आम मनुष्यों की तरह देखने का नहीं है** "

साथ-साथ हमारे जीवन में **योग की शक्ति** बहुत हो। हमारा ललाट योग शक्ति से चमकता हो। तो दूसरों को विशेष आकर्षण होगा।

तो आइये हम सभी स्वयं को ऐसी **श्रेष्ठ स्थिति** में ले चले जो कोई भी हमें देखे तो उसे हम कलियुग मनुष्य नहीं सतयुगी देवता नज़र आये। देव पुरुष नज़र आये। हमारे अंदर उन्हें दिव्यता नज़र आये।

प्रैक्टिकल में इसके लिए हमारे बोल में बहुत सौम्यता हो, बहुत royalty हो। हमारे व्यवहार बहुत ही मधुर हो। हमारे नैन **आत्मिक** हो, शुभ भावनाओं से भरे हुए हो। हमारे चित्त ने चैन पा लिया हो।

जैसे कि संसार की सभी चिन्तायें हमने प्रभु अर्पण कर दी है। वह सब समाप्त हो गई है। इन स्थितियों का ध्यान रखते हुए आज सारा दिन अभ्यास करेंगे ...

सभी को आत्मिक दृष्टि से देखने का और स्वयं को इस **स्वमान** में रखेंगे ...

" मैं विश्वकल्याणकारी हूँ .. इष्ट देव देवी हूँ .. मेरे ऊपर सर्वशक्तिमान की छत्रछाया है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org